आपातकाल में सृजन फुलवारी

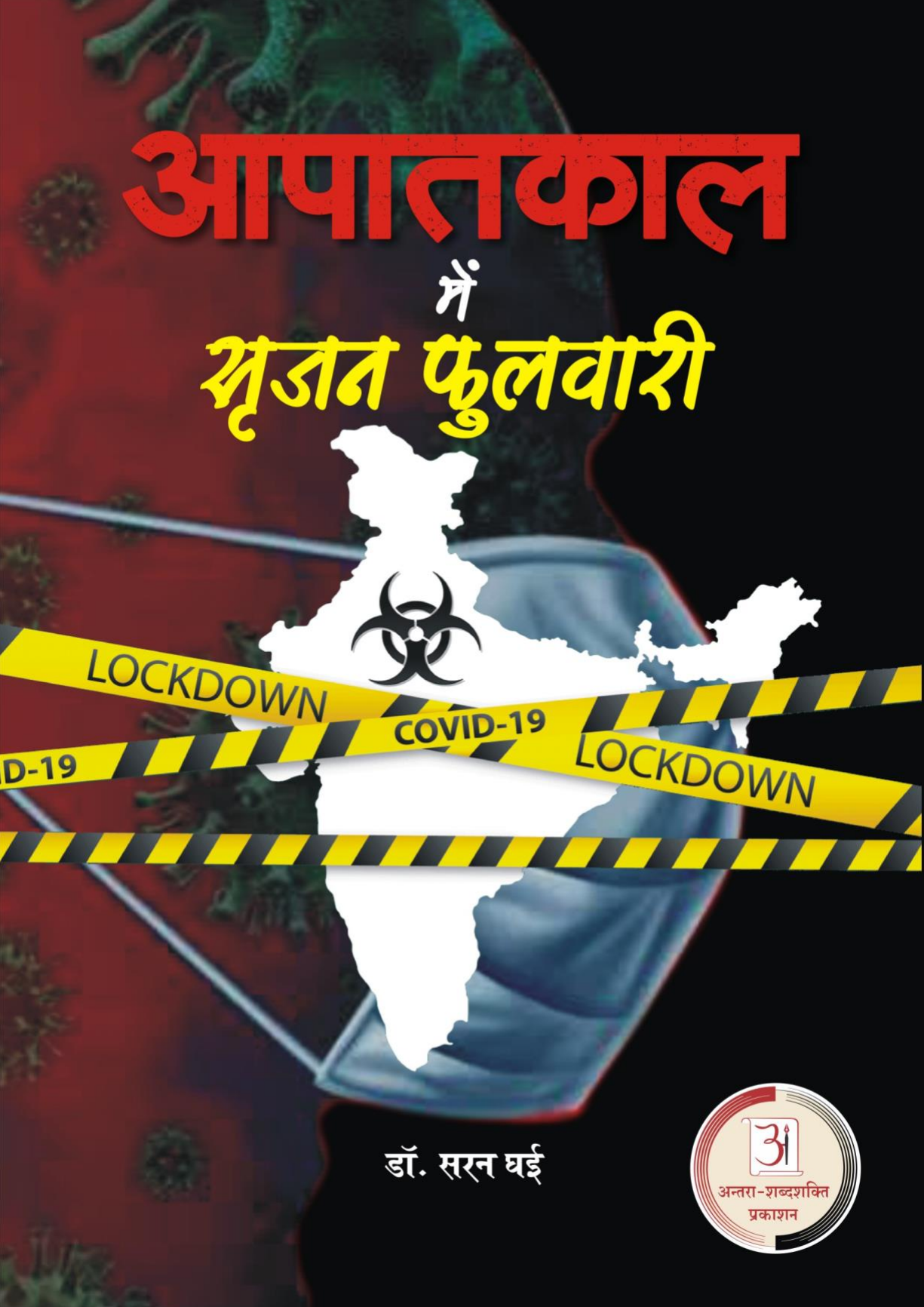

डॉ. सरन घई

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रो. सरन घई

संस्थापक-अध्यक्ष

विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-203-6

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, प्रो. सरन घई
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY PRO. SARAN GHAI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	सुनो, नमस्ते करो न	6
2.	कोरोना- तेरी ऐसी तैसी	7
3.	बचपन में गर स्कूल न होते	8-9
4.	मोमबत्तियां	10
5.	जून की गर्मी	11
6.	हमसे जलते हैं	12
7.	पति, पत्नी और प्यार	13
8.	पत्नियाँ	14
9.	पापा	15-16
10.	कौन सांप कौन इंसान	17-18
11.	रंग रंगीला प्यारा राजस्थान	19-20
12.	विदेश में होली	21

सुनो, नमस्ते करो न!

जब से जग में आया कोरोना, मचा हर जगह रोना-धोना,
हाथ ठीक से साफ़ करो जी, बात पे ध्यान धरो ना,
सुनो, नमस्ते करो न।
हाथ मिलाना बंद करो जी, सुनो, नमस्ते किया करो जी,
बहुत निभा ली रीत पश्चिमी, पूरब राह चलो ना,
सुनो, नमस्ते करो न।
जिस-जिस से थे हाथ मिलाते, वही हाथ अब दिल धड़काते,
भुगतो अब नुकसान सजन जी, ना-नुक्कर तो करो ना,
सुनो, नमस्ते करो न।
पत्नी पति को निकट बुलावे, पति दूर से ही बतियावे,
हे प्रभु ये क्या वाट लगाई, बैरी भया कोरोना।
सुनो, नमस्ते करो न।
मोदी जी कहकर समझाए, ट्रंप, पुतिन सब कहि बतलाए,
गले लगाना बंद करो और हाथ भी दूर रखो ना,
सुनो, नमस्ते करो ना।
कहे पड़ोसन हाथ हटाओ, इधर-उधर ना हाथ फिराओ,
नेकहु निकट न हमरे आओ, दूर से प्यार करो न,
सुनो, नमस्ते करो ना।
अजब मुसीबत जग में आई, डरपावे कोरोना ताई,
'सरन' कही यह मर्म लखाई, मन-मन प्यार करो न,
सुनो, नमस्ते करो न।
जितना निकट एक जन आवे, उतना दूर दूसरा जावे,
मानव और मानवता का यह नव अध्यायय गहो न,
सुनो, नमस्ते करो न।

कोरोना- तेरी ऐसी तैसी

विद्यालय बंद, महाविद्यालय बंद,
विश्व विद्यालय बंद, पार्क बंद, कसीनो बंद,
हार्स रेसिंग बंद, माल बंद, खेल बंद,
पार्टियां बंद, कवि सम्मेलन बंद, कंसर्ट बंद,
शो बंद, फ़ैशन शो बंद, होटल बंद,
बार बंद, व्यापार बंद, बाजार बंद, धरने-प्रदर्शन बंद...
अब और क्या-क्या बंद करवायेगा रे कोरोना?
इंसान को इंसान से कितना लड़वायेगा रे कोरोना?
चीन की अमेरिका से दुश्मनी करवायगा रे कोरोना,
हमारी दुनिया को मुर्दों की बनवायगा रे कोरोना,
तो सुन ले तू ऐसा कर ना पायेगा कोरोना,
जिंदगी पर मौत की फ़तह कर ना पायेगा कोरोना,
बेहतर यही है कि लौट जा जहां से आया है कोरोना,
जा उसी के पास जिसकी माया है कोरोना,
बहुत जल्द तेरा भी इलाज निकल आयेगा रे कोरोना
इंसान तुझ पर भी जंग जीत जायगा रे कोरोना
और सुन आखिरी बात-
डरावनी शक्लें बनायी हैं तूने कैसी-कैसी,
भयावह स्थितियां बनायी हैं तूने जैसी-जैसी,
इंसान की फ़ितरत को न समझना ऐसी-वैसी,
सुन कोरोना, इंसान ही करेगा तेरी ऐसी-तैसी।

बचपन में गर स्कूल न होते

बचपन में गर स्कूल न होते,
माड़साब के रूल न होते,
मम्मी के थप्पड़ ना होते,
पापा के लप्पड़ ना होते।

मास्टर के डंडे ना होते,
टैस्टों में अंडे ना होते,
ना इतिहास, भूगोल न होते,
हम एग्ज़ाम में गोल न होते।

दादू, सूर, कबीर न होते,
साधू, संत, फ़कीर न होते,
गणित में दो-दो चार ना होते,
अंग्रेजी में ख्वार ना होते।

जब जगते जब इच्छा होती,
अपनी कौन परीक्षा होती,
तब सोते जब मन में आता,
किसी का बोलो क्या था जाता।

दिन भर खेल-खेल घर आते,
गलियों में क्या धूम मचाते,
किरकिट, खो-खो और कबड्डी,
सर फूटे या टूटे हड्डी।

ना पढ़ने-लिखने की चिंता,
मस्ती होती निपट निचिंता,
पर जब जीवन की सुधि आती,
मस्ती सभी धरी रह जाती।

झंझावात राह में आते,
मुश्किल में जब खुद को पाते,
घोर अंधेरा आगे दिखता,
जीवनपथ का छोर न दिखता।

नहीं सूझता रस्ता कोई,
होती नहीं व्यवस्था कोई।
ना शिक्षा, ना दीक्षा कोई,
झेली नहीं परीक्षा कोई।

जब जीवन सच सामने आया,
व्याकुल हृदय फिरे घबराया,
काश पढ़े होते बचपन में,
स्कूल गये होते छुटपन में।

जीवन आज दुरूह न होता,
इतना 'सरन' निरीह न होता,
जीवन का आधार है शिक्षा,
हर क्षण जीवन एक परीक्षा।

मोमबत्तियां

मां, यहां मोमबत्ती रखी थी,
कहां रख दी तुमने? जल्दी दो,
मुझे मोमबत्ती लेकर शहर जाना है...
मां बोली, बिजली आ तो रही है बेटा,
मोमबत्ती से क्या, सूरज को दिया दिखाना है?

नहीं मां, पिछली बार गांव में
जब मास्टरनी का बलात्कार हुआ था,
तब सांत्वना जुलूस में मोमबत्ती जलाई थी,
आज शहर में हुआ है एक नर्स का बलात्कार,
फिर से नारे लगाने हैं, सांत्वना जुलूस निकालना है,
मोमबतियों से भटके हुओं को सही मार्ग दिखाना है,
मां, मुझे मोमबत्ती लेकर शहर जाना है।

मां बोली, बेटा ये मोमबत्तियां बलात्कार के बाद नहीं,
बलात्कार से पहले जलाओ,
घर-घर से अज्ञानता का अंधकार मिटाओ,
ज्ञान का प्रकाश फैलाओ,
जीवन की मर्यादा का मर्म समझाओ,
समाज को डूबने के बाद नहीं, डूबने से पहले बचाओ।

लो बेटा, ये मोमबत्ती ले जाओ, अज्ञानता के अंधेरे मिटाओ,
जमाने की सोच को उज्जवल बनाओ,
लोगों के चरित्र को उज्जवल बनाओ,
देश को, समाज को उज्जवल बनाओ,
और ये ज्ञान के दीये सड़कों पर नहीं
दिलों में जलाओ, घरों में जलाओ, जहान भर में जलाओ।

किस बात का दंभ दिखाते हो, किस बात का रुतबा झाड़ते हो,
मुर्दों को उठा ले जाते हो, जिंदों को जिंदा गाड़ते हो,...!

जून की गर्मी

उफ़ कितना जलायेगी और जून की गर्मी,
कब तक निकालेगी पसीना जून की गर्मी।

सर्दी थी तो कहते थे बड़ी ठंड है "सरन",
अब याद कराती है नानी जून की गर्मी।

कुल्फ़ी न मिल्कशेक दिलाते है कुछ निजात,
नींबू की शिकंजी पिलाती जून की गर्मी।

रखो जो बर्फ़ फ़्रिज में हो पानी में वो तब्दील,
बिन बिजली ज्यों पंखा चिढ़ाती जून की गर्मी।

करने चले वो सैर मिले ताजी कुछ हवा,
लू के थपेड़ों ने बढ़ादी जून की गर्मी।

अब कितनी बार और नहायें 'सरन' बता,
पानी का बढ़ा बिल बढ़ाये जून की गर्मी।

हमसे जलते हैं

मैं भी खुशहाल हूँ और आप भी खुशहाल हैं,
जाने क्यों लोग पैसे-पैसे को तरसते हैं।

हुआ हूँ जब से शामिल नये मंत्रीमंडल में,
रात-दिन नोट मेरे आंगन बरसते हैं।

थोड़े से ही तो घोटाले किये हैं सर हमने,
वो जो कुछ कर नहीं पाते वो हमसे जलते हैं।

पले हैं हम तो कार, प्लेन, टीवी, एसी में,
न जाने लोग कैसे पटरियों पे पलते हैं?

हुए अमीर क्या हम हाल यों बदल हैं गये,
वो जो दुश्मन थे अब नमस्ते कर निकलते हैं।

पटाया जब से हमने डाटर आफ़ पड़ोसन को,
मोहल्ले के गुंडे सभी जीजू-जीजू करते हैं।

जब से आया है नाम मेरा पद्मश्री के लिये,
जमाने भर के कवि टेढ़ी आंख तकते हैं।

जिस तरह दिन फिरे मेरे फिरें सभी के 'सरन',
तुम भी एन्जाय करो हम भी मजे करते हैं।

पति, पत्नी और प्यार

लोग अक्सर पूछ लेते हैं मुझे
कैसा पति-पत्नी में होता प्यार है,
और मैं कहता हूँ वैसा ही मधुर
जैसा होता नींबू का आचार है।
खट्टा, मीठा, चरपरा, नमकीन कुछ,
स्वाद की, सुस्वाद की बौछार है,
साथ खाने के इसे खाते रहें,
टेस्ट कर देता डबल हर बार है।
ठीक वैसा ही है पति-पत्नी का प्यार,
जितना कीजे उतना कमतर यार है,
अनलिमिट कीजे कि जितना कर सकें,
फिर भी रहती हर घड़ी दरकार है।
जिंदगी ग़र सघन, सुंदर बाग है,
प्यार बहती सर्द-गर्म बयार है,
पति-पत्नी, प्यार और परिवार इक,
जैसे खाना, पानी और आचार है।
करते हैं पूरी कमी और दुगुना स्वाद,
यही तो वो अनकहा सा करार है।
जिंदगी भर साथ का संबंध है,
खट्टे-मीठे प्यार का अनुबंध है,
कौन सी परिभाषा में हम बांधे इसे,
प्यार है, सुविधा है, या कि प्रबंध है।
कुछ भी कहिये प्यार इक परिवार का,
जैसे नैया, नीर और पतवार है,
प्यार जैसे नींबू का आचार है,
टेस्ट कर देता डबल हर बार है,
खट्टा, मीठा, चरपरा, नमकीन कुछ,
ऐसा पति-पत्नी का होता प्यार है।

पत्नियाँ

डूबती इक नाव होती आदमी की जिंदगी,
ग़र न होतीं जिंदगी में मुस्कुराती पत्नियाँ।

बेसुरा संगीत होती आदमी की जिंदगी।
ग़र न होतीं जिंदगी में गुनगुनाती पत्नियाँ।

गूंजता अट्टहास होती आदमी की जिंदगी,
ग़र न होतीं जिंदगी में खिलखिलाती पत्नियाँ।

मौन सा आकाश होती आदमी की जिंदगी,
ग़र न होतीं जिंदगी में गीत गाती पत्नियाँ।

खाली बर्तन जैसे बजती आदमी की जिंदगी,
ग़र न होतीं जिंदगी में खनखनाती पत्नियाँ।

बिन मसाला मिर्च होती आदमी की जिंदगी,
ग़र न होतीं जिंदगी में सनसनाती पत्नियाँ।

कितनी बेआवाज होती आदमी की जिंदगी,
ग़र न होतीं जिंदगी में टनटनाती पत्नियाँ।

रेंगती रफ़्तार होती आदमी की जिंदगी,
ग़र न होतीं जिंदगी में सरसराती पत्नियाँ।

बंधा बिस्तरबंद होती आदमी की जिंदगी,
ग़र न होतीं जिंदगी में कुरमुराती पत्नियाँ।

पापा

अंगुली थाम के बहुत चलाया पापा तुमने,
जब-जब गिरा मैं बहुत प्यार से उठाया तुमने,
मेहनत कर दिन-रात था पापा पढ़ाया तुमने,
हरदम सच्ची राह पे चलना सिखाया तुमने।

जब-जब ठोकर लगी यही था सिखाया तुमने,
देखके सामने चलो पाठ ये पढ़ाया तुमने,
जब रस्ते में मुश्किल आई रोक के मुझको,
धैर्य और विश्वास का रस्ता सिखाया तुमने।

जब तय करो पड़ाव कोई तब मुड़के देखो,
कितना रस्ता अब तक तय कर पाया तुमने,
कितना आगे जाना है रुक कर यह जानो,
अंधाधुंध नहीं आगे बढ़ जाना तुमने।

सचमुच कितना गहरा ज्ञान सिखाया मुझको,
जीवन जीने का अंदाज सिखाया मुझको,
फिर जिस दिन मेरी बारी आई क्या बोलूँ,
उस दिन भी सब कुछ तुमने सिखलाया मुझको।

लेकिन मैं नादान सीख ना पाया कुछ भी,
कितना तुमने दिया ना ले पाया मैं कुछ भी,
सचमुच मेरे जैसे ही नालायक होते,
तुमने लाखों दिया न मैं रख पाया कुछ भी।

जब मैं हुआ जवान और कुछ वृद्ध हुए तुम,
मैंने अक्सर डांट के तुमको करा दिया चुप,
नहीं चाहिये सीख तुम्हारी बहुत हो गया,
सब कुछ पता है नहीं जानना और मुझे कुछ।

तुमने तब भी यही कहा शाबाश मेरे सुत,
कितना अच्छा है तुम सब कुछ जान गये हो,
जीवन क्या है जीवन की दुरूहता क्या है,
जीवन पथ के मोड़ों को पहचान गये हो।

बस छोटा सा तुम मेरा इक काम ये कर दो,
आगे है इक मोड़ मुझे वो पार करा दो,
दिखता है धुंधला और कदम न पड़ते सीधे,
थाम के हाथ सड़क ये मुझको पार करा दो।

मैंने थामा हाथ चला था चार ही कदम,
आगे इक पत्थर था मैंने ठोकर खाई,
स्वयं गिरा, गिर गये पिताजी बीच चौराहा,
हँसने लगे लोग, मांझा ढीला है भाई।

कौंध गया सारा बचपन तब मेरे आगे,
एक बार भी पापा ने ना मुझे गिराया,
पहली बार हाथ पापा का मैंने थामा,
और पहली ही बार में मैंने उन्हें गिराया।

तब मन ही मन कान मेरे पकड़े तब मैंने,
माफ़ी मांगी पापा से अपनी गल्ती की,
थाम के उनका हाथ ले गया पार सड़क के,
ना इस बार दिखाये तेवर, ना जल्दी की।

इस घटना से सबक मिला जो भूल ना पाया,
इसके बाद कभी ना उनका हृदय दुखाया,
जीवन भर थामी थी जिसने अंगुली मेरी,
हा, इक बार भी हाथ सही से थाम न पाया।

हर वो बेटा जो है समझता खुदा स्वयं को,
उसको इस घटना से लेनी सीख चाहिये,
जैसे बच्चों की पापा करते हैं सेवा,
बच्चों को भी पिता की सेवा करनी चाहिये।

कौन सांप कौन इंसान

इक सांप जा रहा था जंगल की राह पर,
रस्ते में उसे दूसरा सांप मिल गया,
दोनों ने देखा एक-दूसरे को सामने,
और पास आके दोनों प्यार से लिपट गये।

कुछ देर दोनों ऐसे ही लिपटे रहे करीब,
फिर प्यार से दो बात करीं और गले मिले,
मिलने का करके वादा अपनी राह चल दिये,
मैंने सुना है फिर वो अच्छे दोस्त बन गये।

ऐसा ही एक वाकया देखा था शहर में,
पर बात उलट ही हुई इस बार थी मगर,
आते थे आदमी दो सरे राह कहीं से,
इक आ रहा था इधर से और एक उधर से।

पहले ने पूछा दूसरे से आये किधर से?
वो बोला तुम्हें क्या कि मैं आया भी जिधर से,
फिर पहला बोला कौन रंग, कौन जात हो,
ईसाई हो, सिख हो कि हिंदू हो या तुर्क हो?

जो भी हो तुम चुपचाप इस सड़क से सरक लो,
वो बोला नहीं जाऊँगा जो बस पड़े कर लो।
पहले ने कहा जानते हो इस सड़क का नाम,
बिन बूझे चले आ रहे हो क्या तुम्हारा काम?

तब दूसरा भी बोला अकड़ कर, तरेर आँख,
हम आ गये हैं तू बुलाले जो है तेरा बाप।
इस तरह दोनों हो गये थे द्वंद्व को तैयार,
इक गाली देता दूजा देता थप्पड़ों की मार।

चाकू निकाल पहले ने दूजे पे किया वार,
दूजे ने तमंचे से उसको गोली मारीं चार।
दोनों गिरे जमीन पर और दोनों मर गये,
मानिंद सांप दोनों एक-दूसरे को डस गये।

देखा किये थे उनकी लड़ाई वहाँ कुत्ते,
कहने लगे कि आदमी से हम ही हैं अच्छे।
लड़ते हैं मगर बाद में बन जाते हैं हम दोस्त,
हम भौंकते हैं पर नहीं देते किसी को मौत।

दो गदहे खड़े थे वहाँ देखा सभी किये,
इंसान के गदहेपने पे वो भी हँस दिये,
कुछ गिद्ध आ गये वहाँ दोनों का खाने मांस,
कुत्ते भी जुट गये मनाने जश्न वहाँ खास।

इंसान जानवर की तरह लड़ के मर गये,
धर्म, जाति, रंग को बदनाम कर गये।
और जानवर सिखा रहे थे कैसे जियें साथ,
मिल बांट कर खायें, न पूछें मजहब ना जात?

हे ईश, आदमी को भी इंसान बना दो,
रहने का साथ इसको भी शऊर सिखा दो,
ना सांप, ना कुत्ता, ना गिद्ध और न गदहा,
इंसान बस जीत रहे इंसान की तरहा।

रंग रंगीला प्यारा राजस्थान

रंग रंगीला प्यारा राजस्थान,
छैल छबीला प्यारा राजस्थान।
इसकी मीट्टी के कण-कण में,
महक रहा है सारा हिंदुस्तान,
राजपुताना आन-बान और शान,
महलों और किलों की महती आन,
रंग रंगीला प्यारा राजस्थान,
छैल छबीला प्यारा राजस्थान।

यहाँ हूए थे सांगा और प्रताप,
अरि बल इन वीरों ने डाले नाप,
यहीं हूए थे जयमल फत्ता वीर,
भारत की जिनने बदली तस्वीर,
यहाँ हूई थी हाड़ी की रानी,
था महान जिसका अनुपम बलिदान,
रंग रंगीला प्यारा राजस्थान,
छैल छबीला प्यारा राजस्थान।

हल्दी घाटी की मिट्टी प्यारी,
रानी पद्मिनी थी सबसे न्यारी,
मीरां की धरती कुंभा का देश,
यहीं तो हैं सच्चे ख्वाजा दरवेश,
यहाँ खड़ा चित्तौड़ का किला विशाल,
राजपुताना जिसने रखी आन,
रंग रंगीला प्यारा राजस्थान,
छैल छबीला प्यारा राजस्थान।

जैसलमेर, जोधपुर, बीकानेर
जयपुर, कोटा, बूंदी और अजमेर,
अलवर और उदयपुर शहर अनेक,
शोभा सबकी एक से बढ़कर एक,
बाड़मेर सीमा का रखे मान
हरेक शहर है शान-ए-राजस्थान,
रंग रंगीला प्यारा राजस्थान,
छैल छबीला प्यारा राजस्थान।

राजस्थान बंधेज कला की शान,
लाख के गहने हैं इसकी पहचान,
मावा, घेवर, बाटी, चूरमा, दाल,
कचौड़ा, चमचम, फीणी बेमिसाल,
जीवन का हर रंग यहाँ मिलता,
रंगों का गुलदस्ता राजस्थान,
रंग रंगीला प्यारा राजस्थान,
छैल छबीला प्यारा राजस्थान।

बिड़ला मंदिर जयपुर शहर की शान,
रावतभाटा अणुशक्ति की खान,
कोटा का अद्भुत चंबल बैराज,
हर भारतवासी को इस पर नाज,
कत्थक नृत्य कला जयपुर की शान,
'सरन' को राजस्थान पे है अभिमान,
रंग रंगीला प्यारा राजस्थान,
छैल छबीला प्यारा राजस्थान।

विदेश में होली

न टेसू के फूलों का रंग, ना खुशबू, न महक,
ना पिचकारी की वो दूर तक की तीखी लपक,

ना सुनाई यहाँ देती वो सालियों की चहक,
ना पायल की छन-छन न चूड़ियों की खनक,

ना होली के गीत, न डफ़ की थाप, ना भीगी चोली,
ना सुरमई नैन, ना बाबुल का अंगना, ना मस्तों की टोली,

ना रंगों से बचने की भाग-दौड़, ना पकड़ो वो भागा जैसा शोर,
यहाँ की होली तो ज्यों कहीं दूर जंगल में नाचा हो मोर,

न रेडियो पर बजते होली गीत, न होलिका-प्रह्लाद की बातें,
ना मोहल्ले की सालियों को रंग देने की चोरी छुपे घातें,

ना ससुराल की होली, ना नाच गाने का रिवाज,
वहाँ कुछ और था समाज, यहाँ कुछ और है समाज,

ना पत्नी लिफ़्ट देती है न मोहल्ले वाली,
ना पड़ोसन हाथ लगाने दे और न साली,

ऐसी होली का क्या लाभ, इसे बंद करो,
फ़ेसबुक की तरह ओपन होली का प्रबंध करो।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

सृजनशक्ति मानवता को ईश्वर का सबसे बड़ा वरदान है, चाहे वह सृजन आने वाली पीढियों का हो, संसार को और अधिक सुविधामय बनाने हेतु हो अथवा ज्ञान के उत्तरोत्तर विकास हेतु। ऐसा कहे जाने में कोई उज्र नहीं होना चाहिये कि सृजन सतत परीश्रम का सुरभित प्रतिफल है और यदि यह सृजन विपरीत परिस्थितियों में किया जाय तो इसका स्वाद दुगुना- चौगुना हो जाता है।

आज तमाम विश्व कोरोना जैसे राक्षस की चपेट में बंधा कराह रहा है। समुद्री जीव आक्टोपास तो मात्र आठ भुजाओं से अपने शिकार को घेरता है, कोरोना की तो असंख्य भुजाएं हैं तो इसका जो शिकार बन गया, समझ लो काल के मुंह में समा गया।

ऐसे समय में इस भयभीत जगत की भटकन को कोई सच्ची राह दिखा सकता है तो वह साहित्य है। साहित्य मनोमस्तिष्क की खुराक है, विश्वात्मा है, जीने की एक वजह है। और विशेषतः विपरीत परिस्थितियों में साहित्य सृजन उस आकाश दीप के प्रकाश की भांति है जो दूर से ही हमें हमारे पथ को आलोकित कर मंजिल की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। विपरीत परिस्थितियों पर मानव की विजय की गौरवगाथा ही साहित्य की विजय है।

'अंतरा शब्दशक्ति' द्वारा साहित्य के अनवरत सृजन का सफल अतुलनीय प्रयास अपने आप में एक मील का पत्थर साबित होगा, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

रचनाकार
डॉ. सरन घई
संस्थापक, विश्व हिंदी संस्थान, कनाडा

49 Maple Valley Street,
Brampton, Ontario,
Canada 6P7 2A6
Email- ghaisaran@gmail.com
Mobile - 6479930330

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-203-6
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/